"भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण"

प्रथम रिपोर्ट

बिरहा (धरोहर)

प्रेषक

पंकज दुबे

(स्नातक, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय)

पुराना पड़ाव, उमरिया, जिला-उमरिया म.प्र. 484661

दूरभाष : 07653-222615 फैक्स : 07653-222808 मोबा. -+91-99773 43277

E-mail - pankajnsd@yahoo.co.in, pankajnsd02@gmail.com

प्रति,

उप सचिव (आई0सी0एच0)
संगीत नाटक अकादमी
नई दिल्ली

सन्दर्भ :– 28–6/आई0सी0एच0–स्कीम/121/2014–15/13189 के संबंध मे प्रथम किश्त प्राप्ति एवं रिपोर्ट भेजने के संबंध में।

विषय :– **भारत की अर्मूत संस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण के तहत् ''बिरहा'' (धरोहर) की प्रथम रिपोर्ट बावत्।**

महोदय,

निवेदन है कि वर्ष 2014–15 मे मुझे भारत की 'अर्मूत सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण' के तहत् ''बिरहा'' (धरोहर) स्कीम मे मेरा चयन किया गया था जिसके लिये मै आपका आभारी हूँ। स्कीम संबंन्धित जरूरी दस्तावेज फोटो, वीडियो, अनुसंधान कार्य, नक्शा, एवं अन्य दस्तावेज आपको प्रेषित कर रहा हूँ। एवं द्वितीय किश्त भेजने का कष्ट करें ताकि मै अनुसंधान कार्य को गति दे सकूँ।

अतः स्कीम के समस्त दस्तावेजों को स्वीकार कर अनुग्रहित करें।

''धन्यवाद''

पंकज दुबे
(स्नातक–राष्ट्रीय नाटय विद्यालय–नई दिल्ली)
पुराना पडाव उमरिया
जिला उमरिया म0प्र0
पिन – 484661
मो0नं0 09977343277

नोट :– महोदय प्रथम रिपोर्ट 30 जून 2015 तक जमा न कर पाने के संबंध में कारण (पैर फैक्चर) मैने श्रीमान् सुमन कुमार डी0एस0 ड्रामा को मेल द्वारा सूचित किया था।

परिचय

भारतीय कला संस्कृति और साहित्य का जो स्वरूप आज हमारे सामने उपस्थित है वह लोक की कोमल भावसिक्त औत्सवीय प्रवृत्ति से मानक रूप में पल्लवित हुआ है।

हमारा देश ग्राम प्रधान जीवन शैली से सभ्यता के वर्तमान स्वरूप तक पहुँचा है। एक आश्चर्यजनक ग्रामीण संरचना भारत में विद्यमान रही है, तात्पर्यतः पूरे भारत की ग्राम्य संरचना अपने भौगोलिक अस्तित्व में तो भिन्न है किन्तु तात्विक रूप से उसमें सन्निहित ग्राम्य तत्व एक समान सा प्रतीत होता है । यही कारण है कि अपने लोक जीवन को सविशेष बनाने हेतु पृथक–पृथक भौगोलिक सीमाओं में भिन्न–भिन्न कलाओं का स्वाभाविक विकास हुआ है ।

भारत के लोकजीवन में अनुष्ठानगत, रूढ़िगत, कृषि कर्मगत, प्रकृति के परिवर्तन होने वाले सन्धिकाल आदि के आधार पर वैविध्य पूर्ण कलाओं का जन्म हुआ है ।

मध्यप्रदेश में अधिकांश स्थानों पर आदिवासी ग्राम्य जीवन का उत्कृष्ट दर्शन होता है । अधिकांश जनसंख्या कृषि कर्म एवं कृषि संबंधी व्यवसायों से जुड़ी है ।

इस आदिवासी जनसंख्या की बहुलता लिये उमरिया जिला है । आदिवासियों की जनसंख्या के बाद इस जिले में अहीर (यादव) कई गांव मुख्य हैं । पशुपालन, कृषि कर्म इनका भी मुख्य व्यवसाय है ।

शैक्षिक रूप से यादवों की पुरानी पीढ़ियों में शिक्षा के प्रति अभिरूचि रूढ़िगत मान्यताओं के कारण कम ही पाई ग्ई किन्तु आधुनिक पीढ़ी बदलते परिवेश के साथ उत्साह के साथ शिक्षा की ओर अग्रसर है ।

यादवों (अहीर) की संस्कृति एवं परम्परा

आदिवासी बहुल सांस्कृतिक चेतना के मध्य यादवों की भी सांस्कृतिक चेतना पुष्पित और पल्लवित पाई जाती है । प्रकृति के साहचर्य में रची बसी इस संस्कृति के अपने रीति–रिवाज, मान्यतायें, रूढ़ियां, परम्परा एवं विश्वास हैं । जीवन और मृत्यु के मध्य भय, शोक, उत्साह आदि की विविध धारणायें तथा अदृश्य शक्तियों द्वारा संचालन की भावना अन्य लोक कलाओं के विकास के साथ यादवों की इस लोक संस्कृति का भी मान है । देव पूजा भी इसमें निहित है ।

लोक कला एवं लोक संगीत

पारम्परिक आदान से अर्जित यादवों की लोक कला एवं संगीत औपचारिक प्रशिक्षण के बंधन से विमुक्त पारिवारिक सामाजिक कर्तव्य पर आधारित रहा है । जिसे इस समाज के लोगों ने आध्यात्मिकता तथा धार्मिक अनुष्ठान के धरातल पर स्थापित किया है ।

इस लोक संस्कृति में संगीत का संबंध, विविध संस्कारों यथा– विवाह आदि से तथा यात्रा, श्रम, खेल, ऋतु पर्व से रहा है । विवाह संस्कार में गाये जाने वाले गीतों में यहाँ – झूमर गीत, मंडवा गीत, चढ़ाव गीत, भांवर गीत, बिदा गीत, आदि प्रमुख हैं । जन्मोत्सव के समय प्रचलित संगीत में सोहर, गीत बधाई, दादर, नचनदाई दादर, गैलहाइ दादर प्रमुख हैं । मासांण्या आदि गीत मृत्य संस्कार से संबंधित हैं । यात्रा गीतों में भील गीत, ऋतु पर्व में कजरी तिताला, लेजम, बैसवारा, डग्गा, दइका, टटूका, नारदी, फाग राई इत्यादि प्रमुख हैं ।

लोक नृत्य प्रकृति की अनुपम देन है । लोक विश्वास के अनुसार भगवान शंकर एवं माता पार्वती को प्रकृति का रूप माना गया है । न केवल मानव अपितु पशु–पक्षियों में भी उल्लस और क्रीड़ा की अभिव्यक्ति अंगविक्षेप से होती है इसी प्रवृत्ति ने नृत्य का लौकिक स्वरूप प्रकट किया है । शिशु का उछलना, कूदना, पक्षियों का कलरव, मन में उमंग उत्पन्न करता है इसी से अंग संचालन या अंग विन्यास की विविध युक्तियां विकसित हुई जो लोक नर्तन की अनेक उद्‌भावनाओं की कारक सिद्ध हुई हैं।

लोक नृत्य प्राकृतिक है । न इनकी शस्त्रपरक रचना की गई है न ही इनके शास्त्रोक्त सूत्र निर्धारित हैं । जिस भू–भाग की जैसी प्राकृतिक छटा है आज वहां प्रचलित लोक नृत्य भी उसी के अनुरूप हैं ।

यादवों की लोक कलाओं में वैसे तो सामाजिक सहसंबंध के आधार पर कई प्रकार के लोक नृत्य हैं किन्तु उनकी कुल परम्परानुगामी कुछ प्रमुख नृत्य संरचनायें हैं जिनमें अहीर या राउत नृत्य, बिरहा, बरेदी उन्हें अन्यों के बीच विशिष्टता प्रदान करते हैं ।

पशु चारण संबंध यादवों बिरहा लोक नृत्य मुख्यतः विवाह आदि शुभ अवसरों पर किया जाता है । विवाह की विविध रस्मों अलग–अलग प्रकारता से बिरहा गाया जाता है और नृत्य संयोजन होता है । बिरहा में एक पक्ष प्रश्न करता है तो दूसरा पक्ष उत्तर भी देता है । कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष को आदर सम्मान काप्रकटीकरण इसके माध्यम से करते हैं । बिरहा तथा देवारी में एक समानता है कि मुख्यतः इनमें रामायण आदि के दोहे लोकोक्तियां कहावतों मुहावरों और छंदों का प्रयोग होता है । बिरहा में पुरूष तथा स्त्री वर्ग दोनों सम्मिलित होते हैं । कभी–कभी पुरूष महिलाओं के वेशभूषा और महिलायें पुरूषों की वेश भूषा में नृत्य गीत प्रस्तुत करते हैं ।

अहीर (बरेदी) नृत्य परम्परा पशु धारक यादवों का यह नृत्य दैवीय मान्यताओं से संपृक्त है । यादव भगवान कृष्ण के वंशज के रूप में स्वयं को मानते हैं । अतः इसे कृष्ण उपासना से भी सम्बद्ध माना जाता है । इस नृत्यमें लीलाओं का गायन और नर्तन होता है । मुख्यतः इस नृत्य में पुरूष वर्ग ही सम्मिलित होता है ।

इसी तरह चरवाहा पशुओं का रखवाला माना जाता है । कृषि प्रधान संस्कृति में पशुओं का महत्व विदित ही है इन्हीं की सहायता से कृषि कर्म होता रहा है । लक्ष्मी के आगमन के आधार पशुओं क प्रति कृतज्ञता और आदर सूचित करने क लिये दिवारी नृत्य भी करते हैं ।

लोक संस्कृति के संरक्षण की अनिवार्यता उद्देश्य एवं प्रविधि

वर्तमान आधुनिक परिवेश में कृषि कार्य में अमूल–चूल परिवर्तन हुये हैं जिससे पारम्परिक कलाओं पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा है । बहुत सी कलायें तो लुप्तप्राय होती जा रही हैं इसका कारण पारम्परिक आदान–प्रदान में आई बाधा तथा नवीन पीढ़ियों की अभिरूचियों का ह्रास है । अतः हमारा कर्तव्य है कि इनका संरक्षण करें और इनमें सातव्य आये ।

कलाओं का संरक्षण इस उद्देश्य से नहीं किया जाता है कि हम विकास के पारम्परिक रूढ़ स्वरूप को ही सामने लाना चाहते हैं अपितु इसलिये कि यह लोक जीवन की अस्मिता का अस्तित्व का भी प्रश्न है । जो हमें हमारी पहचान उपलब्ध कराता है ।

आधुनिक इस युग में जहां मनोरंजन के अपार साधन आज हमारे समक्ष उपलब्ध हैं वहां मानव के मनोविज्ञान, उसकी धारणा, उसके सामाजिक आध्यात्मिक आचरण पर प्रभाव डालने वाली इन कलाओं को पुर्नजीवित करना आवश्यक है । प्रविध्यात्मक रूप से पारम्परिक कलाओं की मौलिकता को संरक्षित कर उसके पापुलर फार्म को भी विकसित करना होगा जिससे इन्हें विस्तार और सर्वग्राह्यता के स्तर तक पहुंचाया जा सके । विश्व के समस्त कलाविद अपने देश काल और आंचलिक अस्मिता पर कार्य कर रहे हैं ऐसी अनेक कलायें हैं जो आधुनिक परिवेश अनुकूल संरक्षित और व्यवस्थापित की गई हैं ।

कलाओं के परम्परा से प्रशिक्षित लोगों की पहचान करते हुये उनके द्वारा इसके मानकीकरण की दिशा में कार्य अपेक्षित है । यादवों का अहीर, बिरहा, दिवारी आदि नृत्य केवल उनके आंतरिक संदर्भों में नहीं देखा जा सकता क्योंकि समाज के अन्य वर्गों को भी प्रभावित करता है । नई प्रकारता और शुद्ध स्वरूप के बीच एक सेतु निर्माण की आवश्यकता आज है । कलायें जो लोक जीवन में उद्भूत हुई हैं वस्तुतः उनका मनोरंजन मात्र उद्देश्य नहीं है बल्कि यह सह–अनुबंधों, दायित्वों और सह–चेतना के प्रति भी उतनी ही सूक्ष्मता से जुड़ी है ।

आधुनिक पीढ़ियों तक इस संदेश का प्रसार आवश्यक है इसलिये इस संदर्भ में शोध परक दृष्टि से कार्य करना आवश्यक है । जिन भी कारणों से इन कलाओं में च्युति उत्पन्न हुई है उनका अन्वेषण उस क्षेत्र की कला सम्पन्न सभ्यताओं की पहचान आवश्यक है ।

संरक्षण कार्यक्रम के प्रचार की रूपरेखा

1. यादवों के भौगोलिक क्षेत्र का सीमांकन करना तथा उनके प्रवासगत क्षेत्रों का निर्धारण करना ।

2. कलायें जिनके विषय में पुरानी पीढ़ी के लोग मानते हैं तथा जो वर्तमान में भी उन कलाओं के प्रदर्शन करते हैं ऐसे मर्मज्ञों की पहचान करना तथा उन्हीं के माध्यम से प्रशिक्षण की व्यवस्था करना ।

3. प्रशिक्षकों द्वारा ही भावी पीढ़ी को इन कलाओं के सामाजिक पक्ष सांस्कृतिक पक्ष तथा अनिवार्यता के प्रति शिक्षित करना ।

4. इन प्रशिक्षित व्यक्तियों के लिये परम्परानुसार वातावरण निर्मित करना तथा प्रदर्शनों की व्यवस्था करना ।

5. प्रशिक्षण के दौरान आई नवीन उद्भावनाओं को सम्मिलित करना तथा शुद्ध एवं आधुनिक प्रदर्शनों को पंजीबद्ध करना।

6. सरकारी, गैर सरकारी, सामाजिक संगठनों को इस कार्यक्रम से जोड़कर साधनों की व्यवस्था करना साथ ही उनमें इसके प्रति आस्था का भाव उत्पन्न करना ।

7. कलाओं के प्रसार के साथ उसे शहरी जीवन एवं आधुनिक सामाजिक नेटवर्क से जोड़ना ताकि भौगोलिक स्तर पर इनका विस्तार हो सके ।

8. अन्य कलाओं से संरक्षमान कलाओं का प्रदर्शनात्मक संबंध स्थापित करना जिससे प्रायोगिक स्वस्थ प्रतियोगी भाव भी उत्पन्न हो ।

9. पुरूस्कार सम्मान आदि के माध्यम से कलाओं को समझने तथा प्रदर्शनों को प्रेरित करने का कार्य करना ।

10. समय–समय पर गोष्ठियों के माध्यम से समस्या समाधान एवं विकास के नवीन मानकों का मूल्यांकन करना ।

संरक्षण कार्यक्रम की समय सीमा

मध्यप्रदेश कलाओं से सम्पन्न राज्य है । लोक जीवन में इन कलाओं का अनुष्ठानगत होना इनके प्रदर्शनो के कालखण्ड को भी निर्धारित करता है । अतः जिस कालखण्ड में इनके प्राकृतिक स्वरूप का निदर्शन होता है उसी समय के पूर्व समय संयोजित कार्यक्रम योजना भी विकसित होनी चाहिये ।

निर्गलित

परिचयात्मक एवं योजनागत सूचनाओं के साथ निष्कर्षतः कहा जा सकता है यादवों की इन कलाओं के विकास में शासन की भूमिका व्यक्तिगत चेतना आधारित दायित्व में परमावश्यक है । इसी के अनुसार यदि सहायता प्राप्त हो तो वैश्विक स्तर पर आजीविका से जोड़कर भी इनके उत्थान का आदर्श स्थापित किया जा सकता है । नई पीढ़ी के लोग इसमें उत्साहित रहकर कार्य कर सकें यह ध्येय बिना सामाजिक सहायता के या सामाजिक दायित्व के सम्भव हनीं हो सकेगा क्योंकि वर्तमान में इन कलाओं की भौगोलिक है अतः वृत्त बद्ध कार्यक्रम सुचारू रूप से चलाया जा सकता है और इससे हमारे ग्रामीण अंचलों को पहचान का नया स्तर प्राप्त होगा।

साक्षात्कार

उमरिया ज़िले के तीन विकासखण्ड (करकेली, मानपुर, पाली,) जिनमे यादव समाज के लोग निवास करते हैं, व बिरहा, देवारी, छौंका करते हैं।

उनमें से कुछ लोगों से लिए गये साक्षात्कार

1. श्रीमान् नत्थूलाल यादव
2. श्रीमान् रेवा यादव
3. श्रीमान् गणेशा यादव उर्फ बादा काका
4. श्रीमान् तुला राम यादव
5 श्रीमान् मुन्नू लाल यादव
6 श्रीमान् लल्ला प्रसाद यादव
7 श्रीमान् हेतराम यादव
8 श्रीमान् गोपाली यादव

—: श्रीमान् नत्थूलाल यादव :— उम्र — 63

ग्राम अमहा, ग्राम पंचायत सेमरिया, (ब्लाक मानपुर)

जिला—उमरिया (म.प्र.) / मो. नं. 8358822612

सवाल —		**श्रीमान् जी आप काफी बुर्जुग कलाकार हैं बिरहा की विस्तृत जानकारी दीजिए?**
जबाव —		हम लोगों के दैर में बिरहा का बहुत महत्व था हमारे यादव समाज की शान होता था और यही हमारी पहचान थी, हर तीज त्यौहार में शादी, ब्याह में इसको नाचते, गाते थे, खुशीयाँ मनाते थे। किसी दुख या मौत के समय को छोड़ कर यह हर समय गाया—बजाया नाचा जाता था और, इसकी परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।
सवाल —		**नत्थूलाल जी बिरहा के इतिहास के बारे में बताइए ?**
जबाव —		मैं इसका कोई सन् तो नहीं बता सकता पर जैसा की सब लोग जानते हैं की भगवान श्री कृष्ण यादव कुल में जन्मे थे तो भागवत काल (द्वापर युग) से इसकी परम्परा चली आ रही हैं क्योंकि भागवत गीता में भी इसका वर्णन है।
सवाल —		**नत्थूलाल जी बिरहा के वेष—भूषा के बारे में बताइये ?**
जबाव —		बिरहा की मूल रूप से भेष—भूषा लंहगा और चुनरी है बाद में धोती (परदनी) कुर्ता चलन में आया इसके अलावा पैरो में घुघरू, सर में साफा (पगड़ी), कौड़ीयों की माला, डोर, कमर में घुंघरू इत्यादि।
सवाल —		**नत्थूलाल जी समय के साथ—साथ बिरहा में क्या बदलाव आया हैं ?**
जबाव —		हमारे जमाने में बिरहा 100% था आज ये 10% बचा है। आज की युवा पीढ़ी हमारे समाज की, इसमें कोई रूचि नहीं लेती। मैंने पिछले 15 वर्षों से इतने शादी, ब्याह, तीज—त्यौहार देखे पर अब कोई बिरहा नाचना—गाना नहीं चाहता आज की युवा पीढ़ी डी0जे0 में नाचना चाहती है, पर वो अपनी लोक कला नहीं बाचना चाहते उन्हे शर्म आती है, और यदि डांट—फटकार

		के बाद बिरहा, देवारी, करना भी चाहते हैं, तो जीन्स और टीर्शट पहनते हैं।
सवाल –		**श्रीमान् जी देवारी और बिरहा में अन्तर क्या है ?**
जबाव –		यादव समाज में बिरहा और देवारी दोनो का महत्वपूर्ण स्थान है, देवारी भी बिरहा का एक अंग ही है। देवारी सिर्फ दीपावली के समय ही की जाती है, इसकी शुरूआत कार्तीक के महीने में दीवाली के बाद गोवर्धन पूजा से होती है, जिसमें पूजा के बाद गांव के सारे गाय बैलों को एक मैदान में इक्ठ्ठा किया जाता है, जहां पर हमारे गोरइया बाबा का निवास रहता है, उस दिन गाय बैलों को सजाया जाता है पूजा पाठ के बाद देवारी शुरू होती है जो 10 दिन तक लगातार चलती है (एकादसी) इसमें कलाकार डोर (कैड़ीयों की माला और ऊन की ड्रेस) रहती है उसको पहन कर नृत्य करते हैं।
सवाल –		**बिरहा के वाद्य यंत्रों के बारे में बताइये ?**
जबाव –		बिरहा का मूल वाद्य यंत्र नगड़िया, (नगाड़ा) है उसके साथ शहनाई, झांझ, घुंघरू और बैंड (चमड़े का वाद्य यंत्र) होता है।
सवाल –		**बिरहा के लुप्त होने की क्या वजह है ?**
जबाव –		बिरहा अपनी आत्मा से गाया बजाया जाता, नाचा जाता है, इसमें उल्लास और खुशियाँ शामिल रहती हैं आज की युवा पीढ़ी के अन्दर न वो उल्लास है, वो अपने आपको शिक्षित मानते हैं, पर उनके अन्दर शिक्षा का एक भी गुण नहीं हैं। वो अब इस कला को एक मजाक के रूप में देखते हैं, उनके अन्दर न कोई मर्यादा है, और न ही अपनी लोककला को बचाने की कोई सोंच हमने बहुत कोशिश की कि युवा पीढ़ी अपनी लोक कला को पहचाने उसका आदर करे उसको चाहे, पर हम हार गये।

—: श्रीमान् रेवा यादव :— उम्र – 40

ग्राम अमहा, ग्राम पंचायत सेमरिया, (ब्लाक मानपुर)
जिला–उमरिया (म.प्र.)/मो. नं. 8358822612

सवाल –		**रेवा जी बिरहा के बारे में हमें आप विस्तृत जानकारी दीजिए ?**
जबाव –		बिरहा जिसको हम लोग लोक भाषा में देवारी भी कहते हैं। हमारे जानते साल में एक बार कुंवार, कार्तिक में इसका समय आता है, जब दीपावली का त्यौहार आता है उस समय हम बिरहा नाचते हैं, गाते हैं, उल्लास मनाते हैं।
सवाल –		**आप कुंवार, कार्तिक के अलावा साल में कब–कब बिरहा और देवारी करते हैं ?**
जबाव –		बिरहा कई प्रकार का होता है, और से लोग शादी, ब्याह, बारात अगमानी, बिदाई सब में बिरहा गाते हैं। जब कुछ लोग साथ मिलकर रास्ते में चलते हैं, तब भी बिरहा गाते हैं। किसी भी खुशी और उल्लास के समय बिरहा गाते हैं।
सवाल –		**क्या बिरहा मृत्यु या अन्य किसी दुख के अवसर पर गाया जाता है ?**
जबाव –		नहीं तब बिरहा नहीं गाया जाता बिरहा सिर्फ शादी, ब्याह, उत्सव के समय ही गाया जाता है।
सवाल –		**आप के गांव में बिरहा के कितने दल हैं और कितने लोग हैं ?**
जबाव –		अब गांव में वो सयाने लोग जो बिरहा को समझते थे और गाते नाचते थे अब वो नहीं रहे। अब कुल 15–20 लोग बचे हैं जो कभी मौका मिला खासकर दीपावली के समय नाच–गा लेते हैं, पहले काफी लोग थे अग बहुत कम हैं।
सवाल –		**रेवा जी आपकी नज़र में बिरहा का भविष्य क्या है ?**
जबाव –		मुझे तो डर लगता है, कि कहीं भविष्य में बिरहा बन्द न हो जाए क्योंकि लोक कलाकारों को वो सम्मान नहीं मिलता जिसके वो भूखे हैं और नई पीढ़ी न तो इसको सिखना चाहती है, और न करना चाहती है।

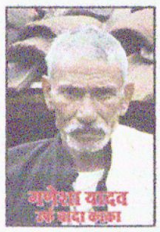

—:श्रीमान् गणेशा यादव उर्फ बादा काका उम्र – 65 ग्राम सेमरिया, ग्राम पंचायत सेमरिया, (ब्लाक मानपुर) जिला—उमरिया (म.प्र.)

श्रीमान् गणेशा यादव उर्फ बादा काका ग्राम सेमरिया के हैं और पूरे जिला उमरिया में न सिर्फ यादव समाज में बल्कि अन्यत्र समाज में भी इनकी लोक कलाकार के रूप में अलग और महत्वपूर्ण पहचान है। इन्होंने न सिर्फ उमरिया जिले में बल्कि जिले के बाहर आसपास के शहरों और ज़िलों में अपनी और दल की प्रस्तुति करके नाम कमाया है, और आज भी इस उम्र में ये बिरहा करते हैं, इन्हें अपने आप पर गर्व है, कि इन्होंने बिरहा को एक धरोहर के रूप में सजाया संवारा और एक थाती के रूप में रखा।

आज हमें इनसे साक्षात्कार करने का मौका मिला.....

सवाल –		**बिरहा के बारे में कुछ बताइए ?**
जबाव –		बिरहा, देवारी, छौंका यह सब पुरातन काल से चला आ रहा है। भगवान कृष्ण के उपदेशों उनकी लीलाओं, भगवत पुराण, गीता के प्रवचनों और दोहों का इसमें उल्लेख रहता है, बिरहा के गीतों के बीच में दोहों का उल्लेख रहता है, जिसको अलाप के साथ गाया जाता है, यह उल्लास, उत्सव शादी, ब्याह में गाया वा नाचा जाता है, ये यादव कुल की पहचान हैं।
सवाल –		**काका बिरहा आपके यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है, या आपने शुरू किया है ?**
जबाव –		ये हमारे यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है, हमारे दौर के लोगों ने इसकी अपनी पहचान धरोहर के रूप में सम्भाल कर रखा और अपनी तरफ से हमने पूरी कोशिश की इसको आने वाली पीढ़ी को थाती के रूप में सौंपे और वो इसको सम्भाल कर रखे, पर ऐसा हो नहीं पा रहा है, इसका हमें दुख है।
सवाल –		**क्या बिरहा को सम्भालने में किसी प्रकार की कोई सरकारी मदद आपको प्राप्त हुई ?**
जबाव –		हमें कभी किसी प्रकार से कोई मदद नहीं मिली हम लोगों ने स्वयं के

		बलबूते पर सम्भाला है। अगर सरकार चाहती तो जितने भी बिरहा के दल हैं, तो सब के पास ड्रेस (कॉस्ट्यूम) होती, गाजे–बाजे होते बिरहा को सम्मान मिलता तो आज यह गर्त में न समाता। अब भी समय है, कि सरकार यदि कला को प्रोत्साहन दे तो आने वाली पीढ़ी इसे सम्भालने में अपनी रूचि दिखाए और बिरहा एक लोक कला के रूप में स्थापित हो।
सवाल –		**काका आज की पीढ़ी बिरहा को क्यों नही सम्भाल पा रही है? क्यों उससे दूर भाग रहे हैं ?**
जबाव –		बिरहा में देवारी में छौंका में जो उपदेश हैं भगवानों के, हमारे ग्रन्थों के वो उनको हजम ही नहीं होते आज की पीढ़ी का D.J. फिल्म, टी0बी0 इन सब की तरफ झुकाव है। वो पता नहीं किस तरह से शिक्षित हो रहे हैं, कि अपनी पहचान और धरोहर से भाग रहे हैं और अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं।
सवाल –		**बिरहा के रीति–रिवाज के बारे में बताइये ?**
जबाव –		जब शादी, ब्याह, तीज–त्यौहार में बिरहा होता है, देवारी में छाहुर बान्धते हैं, और दोहा बोलते हैं और छौंक भी देवारी के साथ–साथ चलता है, छाहुर बांधने के साथ शुरूआत में हम सभी देवी देवाताओं का स्मरण करते हैं, दोहा के रूप में।
सवाल –		**काका आपने जमाना देखा है, आज बिरहा को कैसे बचाया जाये आपका क्या विचार है ?**
जबाव –		आज के समय में अब हम कसको पुकारें किससे कहें अब तो भगवान श्री कृष्ण का ही आसरा है, कि वो कृपा करें आर्शिवाद दें या स्वयं किसी रूप में आकर इसे सम्भाले तो हमारी वंसावली बची रहे, लाज बची रहे और बिरहा एक धरोहर के रूप में बची रहे।

—: श्रीमान् तुला राम यादव :— उम्र – 70
ग्राम सेमरिया, ग्राम पंचायत सेमरिया, (ब्लाक मानपुर) जिला–उमरिया (म.प्र.)

सवाल –		**आपने कब से बिरहा में भाग लेना शुरू किया ?**
जबाव –		बचपन में ही माता पिता का देहांत होने से संभलने में काफी समय लगा 20–25 साल की उम्र तक दुःख में रहे। उसके बाद गांव मोहल्ला पड़ोस के लोगों और दलों को देखकर उत्साह में शामिल हुए और 34–40 साल तक बिरहा, देवारी में खुब मस्त होकर भाग लिया पिछले 02 वर्षों से अस्वस्थ होने की वजह से अब भाग नहीं ले पाते ।
सवाल –		**आपके विचार से नई पीढ़ी के अन्दर कैसे बिरहा के प्रति रूझान पैदा किया जाये ?**
जबाव –		नई पीढ़ी के दल बनाये जायें उनको समझाया जाये और साथ ही साथ आर्थिक मदद उन्हें मिले तो वों आगे बढ़ेगें। वर्तमान में वो सभी चकाचौध की दुनिया में शामिल हैं, कुछ कहो तो कुछ करते हैं।
सवाल –		**आज आपके गांव में कितने दल बचे हैं, और कितने लोग बिरहा में भाग ले रहे हैं ?**
जबाव –		पहले काफी लोग का दल था, 100–50 लोग दल में शामिल थे बिरहा करते थे, अब केवल दो दल बचे हैं, और 10–25 लोग ही शामिल रहते हैं, गांव में यादव समाज के अलावा दूसरी जाती के लोग भी रहते हैं, भुमिया, बैगा, गड़ारी वो लोग भी देवारी और कर्मा करते हैं।
सवाल –		**काका बिरहा को बचाने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए ?**
जबाव –		सरकार इसको बचा ले तो धर्मखाता खुल जाये नहीं तो सब बंटाधार है, सरकार को चाहिए की वो कलाकरों के दलों को आर्थिक सहायता दे उनको ड्रेस, गाजा–बाजा प्रदान करें तो कलाकार आगे आयें और पुराने कलाकारों को सरकार पेन्शन भत्ता दे ताकि वो नये कलाकारों सिखाए और उन्हे आगे बढ़ाए।
सवाल –		**यादव समाज के लोग जीविकोपार्जन के लिए क्या–क्या करते हैं ?**

जबाव –		पहले इतनी मंहगाई नहीं थीं तो दूध बेचना हमारा मुख्य धन्धा था, अब पेट पालने के लिए बहुत मशक्कत करनी पड़ती है, अब हम लोग खेती, किसानी, मजदूरी करते हैं, किसी तरह अपना गुजारा करते हैं, किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं मिलने से, बिरहा, जो कि उल्लास की परंपरा है, तो अब हमारे अन्दर से उल्लास ही खत्म हो गया है।

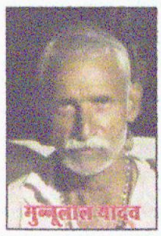

—: श्रीमान् मुन्नू लाल यादव :— उम्र – 60
ग्राम पिपरिया, ग्राम पंचायत पिपरिया, (ब्लाक मानपुर) जिला–उमरिया (म.प्र.)

सवाल –		**काका पिपरिया गांव में बिरहा के कितने दल हैं, और कितने कलाकार हैं ?**
जबाव –		पिपरिया गांव में 3 दल हैं, लेकिन हमारे दल में सबसे सयाने लोग हैं, जो नियम कायदे एवं पुराने रीति–रिवाजों के साथ बिरहा करते हैं, हमारे दल में सबसे सयाने लोग हैं, क्रमशः छोट्टी यादव, मुन्नू लाल यादव, लल्ला यादव हम लोग अपने जीते–जी ये कोशिश करते रहेंगे की बिरहा जो हमारी शान है को बचा कर रखें।
सवाल –		**काका बिरहा, देवारी, छौका के गीतों में प्रसंगों का अन्तर क्या है ?**
जबाव –		बिरहा में शादी, ब्याह से संबंधित गीत होते हैं, देवारी के गीतों में रामायण, महाभारत, और सन्तों के दोहे होते हैं छौंका में रामायण या महाभारत के किसी एक प्रसंग को लयबद्ध तरीके से सुनाया जाता है।
सवाल –		**आज कल के बाजारू गीतो में और लोकगीतों में क्या अन्तर पाते हैं ?**
जबाव –		उन गीतो में बर्वादी के सिवा कुछ भी नहीं है, न समझ में आते हैं न सुर है, न लय है, पुराने गीतों में हमारे लोकगीतों में सुर है, लय है, ताल है, एक समझ है जो हमारी परम्परा है, पहचान है।
सवाल –		**काका नई पीढ़ी का अपनी इस पुरानी परम्परा से क्या संबंध है ?**
जबाव –		आज की पीढ़ी मोबाइल में डुबी हुई है। हम लोगों ने एक अक्षर पढ़ाई नही की है, पर सून–सून कर इन गीतों को अपने दिल में उतारा हुआ है। पहले के जमाने में हम जब छोटे हुआ करते थे, हमारे किसी पड़ोसी के यहां कोई रिश्तेदार आता था, और जब वो लोग बैठकर गाते बजाते थे तो हम लोग दूर बैठकर सुना करते थे और दूसरे दिन जब गाय गोरू चराने जंगल जाते तो उन गीतों को दोहराते थे कुछ भूलता कुछ याद आता पर बाद में सब बन जाता और वही आज हमारे साथ है।

सवाल –		**बिरहा के उत्थान और पतन में समाज की क्या भूमिका है ?**
जबाव –		समाज में अब कला का महत्व नहीं रहा वो हमारे गाने बजाने को हमारी जात से जोड़कर और एक मजाक के रूप में देखते हैं यह काफी लम्बे समय से हो रहा है यह भी इसके एक पतन का कारण है। समाज इन्सानों का है, किसी जाति विशेष का नही समाज में बड़े–बड़े धन्ना सेठ हैं, वो यदि चाहें तो इस तरह की विलुप्त होती लोक कलाओं को बचा सकते हैं और हम लोक कलाकारों को सम्मान से जीने का एक मौका दे सकते हैं, पर सभी अपनी–अपनी झोलियों को भरने में लगे हैं कहाँ बिरहा, कहाँ देवारी।
सवाल –		**काका आप लोगों की नजर में बिरहा, देवारी का भविष्य क्या है ?**
जबाव –		बिरहा में आपस में संवाद अदायगी होती है, गीतों के माध्यम से इसकी सुन्दरता अब धीरे–धीरे खत्म हो रही है। नई पीढ़ी पूरी तरह से मोबाइल, टी.वी. में रम चुकी है, आज से कुछ सालों के बाद हमें ऐसा लगता है, कि बिरहा देवारी का नामो निशान मिट जायेगा।

—: श्रीमान् लल्ला प्रसाद यादव :- उम्र – 55
ग्राम पिपरिया, ग्राम पंचायत पिपरिया, (ब्लाक मानपुर) जिला–उमरिया (म.प्र.)

सवाल –		**बिरहा के बारे में विस्तार से समझाइए ?**
जबाव –		बिरहा, छौंका, देवारी अन्त काल से चला आ रहा है, हमारे यहाँ बिरहा पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। हम लोगों ने बचपन से ही अपने सयानों को देखा गांव के लोगों को देखा उसी प्रकार हम भी शामिल हो गए और आज भी करते हैं।
सवाल –		**क्या बिरहा में आपके समाज की औरतें भी शामिल होती हैं ?**
जबाव –		बिरहा चूँकी शादी, ब्याह, तीज, त्यौहार में गाया जाता है, तो इसमें औरते शामिल हो जाती हैं, औरतें और पुरूष गीतों के रूप में संवाद करते हैं, परन्तु देवारी और छौंका में औरतें शामिल नहीं होती है।
सवाल –		**क्या बिरहा और देवारी का कोई लिखित इतिहास है ?**
जबाव –		हमारे जानते इसका कोई लिखित इतिहास नहीं है, पीढ़ी दर पीढ़ी हम लोग बिरहा देवारी छौंका के गीतों को सुनते आ रहे हैं, वही हमारा इतिहास है ज्ञान है, और सबसे बड़ी बात वही हमारी पूँजी है।
सवाल –		**काका बिरहा के परम्परा को कैसे बचाया जाये ?**
जबाव –		बहुत मुश्किल है, आज की पीढ़ी का कोई रूझान नहीं है, हम लोग अपने दौर में ऐसे थे कि यदि किसी दूसरे गांव में भी हमारे समाज की गम्मत बैठने वाली हो और हमें पता चल जाये तो हम लोग गर्मी हो या बरसात पैदल ही पहुंच जाते थे, कोई मौका नहीं चुकते थे। पर आज की पीढ़ी मोबाइल, टी.वी. पिक्चर इन सब में डूबी हुई है, उन्हें अपने इस कला की पहचान नहीं है, न ही वो लोग इसे पहचानना चाहते हैं, हाँ आर्थिक मद्द मिले तो कुछ सम्भावना है।
सवाल –		**काका बिरहा देवारी के प्रति आज दर्शकों का क्या रूझान है ?**
जबाव –		जैसे पहले रामलीला, नौटंकी को देखने के लिए पूरा गांव का गांव उमड़ पड़ता था अब वैसा माहौल नहीं हैं, घर–घर में टी0वी0 होने से अब कोई बाहर नहीं निकलना चाहता वैसे ही बिरहा, देवारी और छौंका के प्रति वैसा दर्शक समूह नहीं रहा ये जरूर है, कि हमारे गांव में अब भी कुछ दर्शक समूह बचा हुआ है।

—: श्रीमान् हेतराम यादव :— उम्र – 50

ग्राम धतूरा, ग्राम पंचायत धतूरा, (ब्लाक करकेली)
जिला–उमरिया (म.प्र.)/मो. नं. 09009399919

उमरिया जिला के अन्तर्गत ग्राम धतूरा है वहॉ के निवासी हैं, श्रीमान् हेतराम यादव जिनकी बिरहा के बारे में काफी अच्छी जानकारी है और पूरे सम्भाग में बिरहा के समस्त रूपों के सबसे अच्छे जानकार हैं।

हमने उनसे मुलाकात की और बिरहा, देवारी के बारे में कुछ बातचीत की.....

सवाल –		**हेतराम जी पहले तो आप उमरिया का जो लोककला का इतिहास है उसे आप संक्षेप में बताइये।**
जबाव –		पूरे बघेलखण्ड और उमरिया ज़िले में जिस तरह से आदिवासी समाज की लोक कला एवं परम्परा है जिसमें कर्मा, सैला, कोलदहकी, रीना, छिद्दी, आदी अन्य हैं। उसी तरह यादव समाज का भी लोक नृत्य बिरहा, देवारी अपने आप में काफी समृद्ध है और समय–समय पर सभी इसे पर्व, तीज त्यौहार पर नाचते गाते हैं।
सवाल –		**हेतराम जी बिरहा और देवारी के बारे में संक्षेप में बताइए ?**
जबाव –		बिरहा हो या देवारी ये परम्परागत ज्ञान है, जो हमें पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त हुआ है इसका कोई विधिवत प्रशिक्षण नहीं दिया जाता, हम लोगों ने बचपन से ही अपने बुजूर्गों को बिरहा देवारी करते देखा, सुना, समझा यही हमारा लोक प्रशिक्षण है।
सवाल –		**बिरहा और देवारी में अन्तर बताइए ?**
जबाव –		बिरहा और देवारी में समय और प्रस्तुती के अन्तर के साथ–साथ राग, लय, ताल का अन्तर है। एक बड़ी समानता है, कि दोहा दोनो में प्रस्तुत होता है। बिरहा बिरह का लोक नृत्य है, विवाह के समय लड़की पक्ष वाले बिदाई के समय इसे प्रस्तुत करते हैं तो आस–पास का माहौल भावुक हो उठता है, और जब लड़का पक्ष वाले बिरहा प्रस्तुत करते हैं, तो उसमें लड़की पक्ष वालों के लिए आभार होता है। देवारी दीपावली के बाद, समाज अपने ईष्ट देव को सुमिरता है और दीपावली से लेकर आने वाले दस दिनों तक

		(एकादसी) तक वे खुशी में देवारी नृत्य प्रस्तुत करते हैं, और अपने गाँव के अलावा शहरों में भी आकर देवारी प्रस्तुत करते हैं। दोनो में ही मुख्य रूप से रामायण की कथा वस्तु को दोहों और चौपाईयों को गाकर नाचकर प्रस्तुत करते है।
सवाल –		**हेतराम जी आज जब लोक कलाएं विलुप्त होती जा रही हैं तो आप बिरहा और देवारी का क्या भविष्य देखते हैं ?**
जबाव –		ये सच है कि वर्तमान समय में सभी लोक कलाएं खत्म होती जा रहीं हैं। आज की युवा पीढ़ी बिरहा और देवारी करने में शर्मिंदगी महसूस करती है, पर हमने और हमारे जैसे कुछ लोगों ने बिरहा और देवारी को जीवंत रखने के लिए बीड़ा उठाया हुआ है। हम बुजुर्गों से आग्रह करते हैं की वे आने वाली पीढ़ी को इसकी जानकारी दें, स्वयं नाचें–गायें ताकि आने वाली पीढ़ी अपनी इस गौरवशाली परंपरा को जीवित रख सकें। इसके अलावा हम स्कूलों में विद्यालयों में आस–पास के क्षेत्रों में खेल कूद व प्रशिक्षण के माध्यम से इसे जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं।
सवाल –		**हेतराम जी लोक नृत्यों के पतन की वजह एवं इसको संजोए रखने के प्रयास के बारे में प्रकाश डालिए ?**
जबाव –		पतन की मुख्य वजह शहरीकरण है। आज की युवा पीढ़ी शहर की चमक–दमक से बहुत प्रभावित हैं। अब वो गांव लौटकर नहीं जाना चाहते, बिरहा और देवारी के बजाय डी0जे0 और डिस्को से प्रभावित हैं। इस परम्परा को जिन्दा रखने के लिए हम लोगों से जितना प्रयास हो सकता है हम कर रहे हैं। सरकार यदि चाहे तो इस तरह के बिरले लोक नृत्यों को संरक्षण देकर पाल पोस सकती है। क्योंकि गरीबी भी इसके पतन की एक वजह है आज हर दल वाले इसकी वेश–भूषा और वाद्य यंत्र (मृदंग, बांसुरी, टिमकी, खनजनिया) नहीं खरीद सकते।

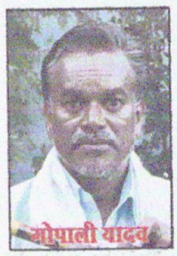

—: श्रीमान् गोपाली यादव :— उम्र – 40

ग्राम धतूरा, ग्राम पंचायत धतूरा, (ब्लाक करकेली)
जिला–उमरिया (म.प्र.)/मो. नं. 9009399919

सवाल –		**बिरहा के इतिहास के बारे में जानकारी दीजिए ?**
जबाव –		बिरहा का तो मुझे कुछ लिखित इतिहास तो नहीं पता हैं परन्तु इतना जानता हूँ कि यह पैराणिक काल से चला आ रहा है, चूँकि हमारे यहाँ यह एक परम्परा के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है, तो हमने वही देखा सुना समझा और वही हम भी कर रहे हैं।
सवाल –		**आपका व्यक्तिगत पेशा क्या है, और आप बिरहा के लिए अपने कार्य से कैसे समय निकालते हैं ?**
जबाव –		पेट और परिवार को पालने के लिए मैं खेती किसानी करता हूँ, पर अपनी आत्मा को सुकून देने के लिए मैं बिरहा देवारी में भाग लेता हूँ, और स्वंय के लिए बासुंरी बादन भी करता हूँ।
सवाल –		**युवा पीढ़ी बिरहा की परम्परा को आगे बढ़ाए इसके लिए आप क्या प्रयास कर रहे हैं ?**
जबाव –		हम पूरी कोशिश करते हैं कि अपने समाज के युवाओं को आगे लाएं ताकी वो हमारे इस धरोहर को आगे बढ़ा सकें । इस लिए हम जब भी बिरहा देवारी का कार्यकम करते हैं तो कार्यकम मे युवाओं को भी साथ लेते हैं नहीं आने पर डांट भी लगाते हैं। हालांकि अब पहले जैसा माहौल नहीं रहा।
सवाल –		**बिरहा को आगे बढ़ाने के लिए आपकी समझ से क्या प्रयास करना चाहिए ?**
जबाव –		बिरहा के बिलुप्त होने के कई कारण हैं, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक। जहाँ– जहाँ भी यादव समाज है वहां बिरहा होता है किन्तु ड्रेस न होने से वाद्य यन्त्र (गााजा – बाजा) न होने से उत्साह खत्म होता जा रहा है। आज कि समाजिक व्यवस्था इस तरह की हो गई है, जहां लोक कलाकारों की कोई इज्जत नहीं है और जब कलाकारों को साम्मान नहीं मिलता तो

		उसका उराव (उल्लास) खत्म हो जाता है। आर्थिक व्यवस्था (मंहगाई) भी एक बहुत बड़ा कारण है कि युवा वर्ग अब आगे नहीं आना चाहता । साथ ही साथ गाँव – गाँव में एक कलामंच होना चाहिए जिसमे कलाकार अपनी प्रस्तुति पेश कर सकें।
सवाल –		**जिले मे जहां भी यादव समाज है उसमे धतूरा गाँव बिरहा में सबसे आगे है, इसकी क्या वजह हैं ?**
जबाव –		धतूरा गाँव एक दौर में (आजादी के पहले से) जिले के सम्पूर्ण यादव समाज के लिए जो फैसला करते थे वही सर्वमान्य होता था, समाज के देमान, (दीवान) मुकद्दम इसी गाँव के होते थे। इसी वजह से यहां बिरहा, देवारी और छौंक की एक महत्वपूर्ण परंपरा तब से लेकर आज तक कायम है, और हम लोग इस बात की पूरी कोि । । कर रहें हैं कि समाज की यह परंपरा जो हमारी भाान है, पहचान है हमेशा जिन्दा रहे।
सवाल –		**बिरहा का भाविश्य आने वाले कल में क्या होगा ?**
जबाव –		एक दौर था जब दिपावली के दूसरे दिन से एकादसी तक यानी 10 दिन तक लोग सुबह 10 बजे से अपने घरों को बंद कर खेरका (यादव समाज की एक सामुहिक जगह, मैदान) पहुँच जाते थे और लगातार बिरहा, छौंका, देवारी उल्लास से मनाते थे घर–घर में दलों को न्योता दिया जाता था। 5–5 के दल वहां जाते और पूरी रात बिरहा, छौंका होता । जो आर्थिक रूप से सम्पन्न होता बाकी लोगों को दार–बरा (क्षेत्रिय व्यंजन) का न्यौता देता था सब लोग वहां पहुंचते पंगत मे एक साथ दार–बरा भात खाते फिर रात भर पूरे आनंद के साथ बिरहा, छौंका, देवारी का आनंद लेते थे, पर अब रात काटे नहीं कटती किसी को न इतनी फुरसत है न इस कला में कोई रूची रह गई है ।

बिरहा गीत (1)

1. सुवना मोर संदेसहा, कोइली मोर पतिहार।
   समधी का लिखू भेंट पांइलगी, समधिन का भेंट कमार ।।

2. आये समधी बड़ नीक लागै, गये सून होई जाय।
   दिनै चार मोहि चकमैं लागै, फिर वैसइ होई जाय।।

3. चढ़त–चढ़त चढ़ि आयों, चीन्ह नहिं पहिचान।
   किससे करूँ भेंट पांइलगी, किससे करूँ पहिचान।।

4. कन्या धन धूप सा, तपना उसका काम।
   सुबह पिता के घर है, दिवस पिया के धाम।।

5. दूध खांय का भैंइसी लाइलै, धन ज्वारैं का गाय।
   चढ़ैं का हो तो हाथी लइलै, रन जुझैं का घोड़।।

बिरहा गीत (2)

1. चित्रकूट के घाट में जोगी सुवा पढ़ायें,

जब सुवना राम–राम कहें जोगी ध्यान लगाय।।

2. राम न मारें काहूँ का राम न पापी होय।

अपने से मर जायेंगे झर–झर खोटा काम।।

3. रावण के बीच सभा में अंगद रोपे पांव।

पांव हिलायें न हिलें धरती हिल–हिल जाय।

4. धन चंदा तेरी चांदनी धन सूरज तेरी जोंत,

धन तिरईया तेरी मोहनी मोहे तीनों लोक।

देवारी गीत – दोहा (1)

1. वृंदावन से वन नहिं, नंद गांव से गांव।
राधा प्यारी से प्यारी नहिं, कष्ण नाम से नाम।।

2. देव सुमिरौं देवखड़ी, अंजनी वीर हनुमान।
यशोदा के कन्हैया सुमिरों, मुरली के वजावन हार।।

3. चार महीना गाय चरायों, कातिक पहिरों डोर।
आंखों के बरसा मा चाकी परिगै, झांपी मा सरगै डोर।।

4. तुलसी कहै मामरन से, तैं खेरों चढ़ि आय।
मोही पूजैं बानी बाम्हनैं, तौ ही पूजैं कन्हैं ग्वाल।

5. सब कोऊ सुमिरैं देवी देवता, मैं केहि सुमिरैं जाऊँ।
मैं तो सुमिरौं खेरका केर गोरइया, सकरे होय सहाय।।

देवारी गीत – दोहा (2)

1. ऐहें सब कोई सुमरैं देवी देवता जौंनो, अऊ मैं केहि सुमरैं जाऊं।
मैं तो सुमरों खेरवा के गोरइया, संकरे होय सहाये या ।।
हियो–हियो

2. ऐहे घाट पुजों घटाबईया जौंनो, अऊ घट पुजों मसान बीच गली मा गलईया गलवा पुजों, अऊ सब सोंधो के पाट।। हियो–हियो

3. ऐहे.... राम पुछैं लक्ष्मण से जौंनो, और कहां देवारी होय।
होय तो देवारी नंद बाबा के घर में अहिराने खोर ।। हियो–हियो

4. ऐहे कृष्ण जी के बाग में जौंनो, फूलों फूल सफेद ऐ। राधा जी पुछैं कृष्ण से कृष्ण नाम नही लेत ।। हियो–हियो

5. ऐहे ए कारी का सोंहे कसकुटिया रे, श्यामली का सोहें ढ़ार रे।
गोरी का सोंहे नाके नथनी, जेखे मखमल जैसे गाल ।। हियो–हियो

6. ऐहे सावन भादों गाय चराऊं जौंनो, क्रार्तिक पहनो डोर ऐ। आंसो के बरसा मा चाली परगें, झांपी मां सरगे डोर।। हियो–हियो

उमरिया जिले के वो गाँव जहां यादव समाज रहता है और बिरहा, देवारी प्रस्तुत करता है।

ब्लाक मानपूर के ग्राम	
1	अमहा
2	सेमरिया
3	बड़वार
4	बांधा स्थेली
5	मुड़गुड़ी
6	खैरा
7	धमोखर
8	खरहा डांढ़

उमरिया जिले के वो गाँव जहां यादव समाज रहता है और बिरहा, देवारी प्रस्तुत करता है।

ब्लाक करकेली के ग्राम	
1	धतूरा
2	लोढ़ा
3	भरौला
4	धनवाही
5	नरवार
6	कछरवार
7	बहरवाह
8	बरमानी
9	बरही (मझौउली)
10	चाँदनपुर
11	अमड़ी
12	गिंजरी
13	मजमानी
14	मर्दरी
15	बिरहुलिया
16	शिलपरी
17	बरही (करकेली)
18	खालेकठई
19	सहजनारा

उमरिया जिले के वो गाँव जहां यादव समाज रहता है और बिरहा, देवारी प्रस्तुत करता है।

ब्लॉक बीरसिंहपूर पाली के ग्राम	
1	धौराई
	(पाली ब्लॉक के शेष अन्यत्र गांव में आदिवासी वर्ग रहता है।)

उपरोक्त ब्लॉक के – अमहा, पिपरिया, सेमरिया एवं धतूरा गांव में जाकर लोक कलाकारों का साक्षात्कार किया, उनके लोक नृत्य (बिरहा एवं अन्य) को रिकार्ड किया इसकी सम्पूर्ण जानकारी मैं अपनी प्रथम सूची में भेज रहा हूं। तीनों ही ब्लॉक के अन्य गांव में मैं दूसरी एवं तीसरी रिपोर्ट में गांव–गांव जाकर लोक कलाकारों से मिलूंगा उनके साक्षात्कार लूंगा एवं विलुप्त होते बिरहा एवं अन्य लोक कलाओं को संरक्षित व पल्लवित करने का कार्य करूंगा, एवं संबंधित समस्त दस्तावेज आपकों प्रेषित करूंगा।

जिला उमरिया (बांधवगढ़)
मापमान १ इंच = ४ मील
जिला सतना
जिला कटनी
जिला शहडोल
जिला जबलपुर
जिला डिण्डोरी
जिला अनुपपुर
बांधवगढ़
उमरिया
मानपुर
चंदिया
पाली
नौरोजाबाद
संकेत
सीमा :- जिला
तहसील
विकास खण्ड
आरक्षित वन
रेलमार्ग : बड़ा स्टेशन सहित
छोटा
खनिपथ
सड़कें : पक्की मीलों के पत्थर सहित
नदी, नाले, नहरें ग्राम आबादी
ज्यामितीय केन्द्र, स्थिर बिन्दु
समुद्र सतह से फुटों में ऊंचाई